।। मुनि 'आलोक' अवतारी पुरूष।।

श्री सुन्दर लाल बहुगुणा

मानव जाति अब विनाश के कगार पर खड़ी है। अब या तो सर्वनाश होगा या सर्वोदय। जैन धर्म ने अहिंसा परमोधर्मः का संदेश देकर जीवन की दिशा में बढ़ने का मार्ग दिखाया है। इस मार्ग पर चलकर ही हम जीवन की ओर बढ़ सकते है। इसलिये हमे इस पंथ पर चलना है। प्रशस्त पुण्य पंथ है। बढ़े चलो बढ़े चलो। ये शब्द चिपको आंदोलन प्रणेता पर्यावरण शुद्वि के लिये प्रयासरत सुन्दर लाल जी बहुगुणा ने मुनि श्री विनय कुमार जी आलोक से अणुविभा केन्द्र मालवीय नगर, जयपुर में वार्तालाप के मध्य कहे।

उन्होने आगे कहा भारतीय संस्कृति अरण्य में जन्मी और फली फूली है उसने मनुष्य को प्रकृति के साथ मां का जैसा व्यवहार करने का संदेश दिया है। मुनि श्री उसको जन–जन में फैलाकर मानव जाति की अमूल्य सेवा कर रहे है। इस देश को ऋषि मुनियों ने संस्कृति का संदेश देकर प्राचीन मूल्यों की रक्षा की है। मुनि श्री उस कार्य में लगे हुए है। इसके लिए उनका योगदान अद्भुत है। वे अवतारी पुरूष है। अहिंसा का संदेश ही हमें जिंदा रखेगा और भारत के गौरव को पुनः स्थापित करेगा। मुनि श्री विनय कुमार जी आलोक ने कहा जैन दर्शन में पन्द्रह कर्माधान का मूल उल्लेख मिलता है। उसमें बताया गया है व्यक्ति खनन पाने आदि आदि से बचाव करे जिससे समाज मे प्रदूषण नही फैले। प्रदूषण से आज पूरा वातावरण प्रदूषित हो रहा है। सबसे अधिक प्रदूषण हवा में है। हर सांस के साथ प्रदूषण युक्त हवा जाती है जिससे व्यक्ति अस्वस्थ हो रहा है। अब तो कोई भी वस्तु ऐसी नही है जो प्रदूषण मुक्त है। रोटी पानी भी प्रदूषण युक्त है। ऐसी स्थिति में सामाजिक जागरूकता आवश्यक होती है। जब तक समाज में जागरूकता पैदा नही होगी पर्यावरण शुद्वि की बात कथन एवं लेखन तक रहेगी। जरूरत है प्रत्येक व्यक्ति जागरूकता के साथ प्रदूषण फैलाने से बचे तब ही स्वस्थ समाज एवं स्वस्थ परिवार का निर्माण हो सकता है। पानी का बचाव आज और भी ज्यादा जरूरी हो गया है। जैन धर्म तो प्रारम्भ से ही इस बात पर बल देता आया है। बचाव में ही बचाव है। इस वार्तालाप में मोहन भाई जैन, विकास जैन, संचय जैन, मुनि श्री अभय कुमार जी व मुनि श्री गिरिश कुमार जी भी उपस्थित थे। विकास जैन एवं संचय जैन ने साहित्य भेंट कर बहुगुणा जी को सम्मानित किया।

अणु विभा केन्द्र